

ॐ नमो श्रीकृष्ण निरञ्जनाय:

श्री भक्तिरस बिन्दु: ।

(प्रेमानुराग खण्ड)

—:-:o:-:—

कांधला निवासी श्रीमान् दुर्गाप्रसादात्मज
सीताराम रचित

सम्वत् १९९१ विक्रमी

श्रीमान् भक्त मेदीराम सूरजभान जी
झिंझाना निवासी ने भगवत् प्रेमी जनों
के हितार्थ छपवाया।

अधिकारी:— भगवद् भक्त

मूल्य:— हरि प्रेम

॥ शुभं भूयात् ॥

इम्पीरियल प्रिंटिंग प्रेस चांदनी चौक देहली में बाबू रघुबर
दयालजी के प्रबन्ध से छपी। (मई १९३४)

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

॥ भूमिका ॥

पुस्तक, श्री भक्तिरस-बिन्दु, सम्वत् १९८३ विक्रमी में प्रकाशित होकर पाठकगण की भेंट की जा चुकी है। अबकी बार इसमें से सम्पूर्ण आत्म-विज्ञान के निरूपण करने वाले पद, स्तोत्र तथा कुण्डलियों को छोड़ कर केवल थोड़े से भगवद्‌-प्रेमानुराग के पद ही पाठकगणों को समर्पण किये जाते हैं। जो प्रेमी जन, भगवत रसिक होते हुए, कुछ मनन विचार का कष्ट भी उठाना चाहें, यह पद उनको आह्लाद जनक प्रमाणित होंगे, ऐसी मेरी भावना है। आशा है रसिक जनों को यह छोटी सी पुस्तक रुचि-दायक होगी। पाठकगण भूल-चूक को क्षमा करें और अशुद्धियों को सुधार कर पढ़लें।

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

लेखक—

॥श्रीराम गुप्त

कांधला, वैशाख बदी ११ सं० १९९१ वि०

॥ ॐ श्री हरिः ॥

श्री भक्तिरस-विन्दु के प्रेमानुराग खण्ड की विषय सूचि ।

ओं नमो: श्रीकृष्ण निरञ्जनाय आरती ।

टेकः—जय जय शङ्कर स्वामी, प्रभु जय शङ्कर स्वामी ।
देव निरञ्जन ब्रह्म सनातन, शिव अन्तर्यामी ॥ ॐ ॐ हरि ॐ ॥
मन बुद्धि ते परे बिलक्षण, शुभ मति प्रकाशे, प्रभु शुभ मति प्रकाशे ।
जिज्ञासू जन ताप हरे सब भ्रम संशय नाशे, ओंम् ओंम् हरि ओंम् ॥ २ ॥
सुनेश्रोत्र नहि, सुने जाहि ते, सतचित् आनन्दं प्रभु सतचित आनंदे ।
देव देव महादेव स्वयम्भू शंमानित वन्दे, ओंम् ओंम् हरि ओंम् ॥ ३ ॥
शब्द जाहि नहिं कथन कर सके, ॐ लक्ष ज्ञानं प्रभु ॐ लक्ष ज्ञानं ।
सर्वनाम बिन लक्ष ब्रह्म चिद्र सत्ता निज भानं, ओंम् ओंम् हरि ॐ ॥ ४ ॥
चक्षु जाहि नहिं देख सकत जो, सूरज उजियारं प्रभु जो सूरज उजियारं ।
एक रूप बहु रूप पसारे, निज माया धारे ॥ ओंम् ओंम् हरि ओंम् ॥ ५ ॥
प्राण जाहि बिनु चलत न वायू, द्रवता जलमाही प्रभु द्रवता जलमाहीं।
अनुभव रूप स्वयं प्रकाशक, सन्तन हरषाहीं ॥ ओंम् ओंम् हरि ॐ ॥ ६ ॥
शङ्कर रूप धरे गुरु देवा सनकादक तारे, प्रभु सनकादिक तारे ।
कृष्ण रूप अवतरे निरंजन रामा हित कारे ॥ ओंम् ओंम् हरि ॐ ॥ ७ ॥
निज माया से भक्तन हितु, अव्यक्त व्यक्तिधारी, प्रभु अव्यक्त व्यक्तिधारी
काशायम्बर यतिरूप से शङ्कर त्रिपुरारी ॥ओंम् ओंम् हरि ॐ ॥ ८ ॥
शुद्ध हृदय का थाल सजाऊं ज्ञान दीप ज्योती, प्रभु ज्ञान दीप ज्योती ।
भाव भक्ति की माला डालूं, गिरा प्रेम मोती, ॥ओंम् ओंम् हरि ॐ ॥ ९ ॥
ॐ ॐ की ध्वनी लगाऊं सोहं सो ध्याऊं, प्रभु सोहं सो ध्याऊं ।
आपा करूं भेंट ईश्वर की लक्ष सम जाऊं ॥ ओंम् ओंम् हरि ॐ ॥१०॥
अनन्य भाव से पढ़े आरती चिदसाक्षी ध्यानं, प्रभु चिदसाक्षी ध्यानं ।
भेद भर्म सब मिटे निरंतर अनुभव रमानं ॥ ॐ ॐ हरि ॐ ॥११॥

अथ अभेद भक्तिः ।

मिले जो हैं आंखों के इशारे, इधर हमारे उधर तुम्हारे ।
सदा स्वरूप एक ही हैं प्यारे. इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
जो राम तुम हो मैं जानकी हूं,तू देख मुझको मैं तुझको देखूं

है आत्मा एक ही न न्यारे, इधर तुम्हारे उधर हमारे ॥
मैं राधिका हूं तो आप मोहन,जो प्राण हूं मैं तो तुम मेरे मन
न रह सकें ये बिना सहारे, इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
जो तुम हो सरिता तो मैंभी जल हूं, जुदा न मैं तुमसे एक पलहूं
जुदा जुदा क्या हुए किनारे, इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
जो तुम हो सोना तो मैंहूं गहना, न खोटका मुझको दो उलहना
मिले हैं अन्तर नहीं जुदा रे, इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
जो तुम प्रियतम,तो प्रिय हूं मैं,जो तुमहो बाणी तो उसकी धुनमैं
ये गायेंगे गीत लोग सारे, इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
जो सूत हो तुम,तो मैं हूं वस्तर, जो तुम हो धातू तो मैंहूं शस्तर
है व्यर्थ यह नाम रूप सारे इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
जो तुम हो दीपक तो मैं उजाला, जो तुम हुताशन तो मैंहूं ज्वाला
किसी ने कुछ नाम कह पुकारे,इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
जो सच्चीदानन्द तुम हो पूरण, तो मैंहूं कूटस्थ साक्षी चेतन
हैं पट जो मायिक खुले हैं सारे, इधर हमारे उधर तुम्हारे॥
है वास्तव भेद का मुंह काला,तुम्हीं हो मणिका तुम्हीं हो माला
हैं एक चिदघन के सब पसारे, इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥
तुही है ईश्वर तुही है सृष्टी, तुही है दृष्टा तुही है दृष्टी ।
हैं स्वप्नवत् ही यह भेद सारे, इधर हमारे उधर तुम्हारे ॥

अथ प्रेमानुरक्तिः ।

हुए दर्शन रामके जबसे सखी सब अपना बेगाना छोड़ दिया
हरि ध्यान की धुनमें समाय रही रसबात बनाना छोड़ दिया ॥टेक॥
सर्वात्म ब्रह्म ही साजत है, इक तार निरन्तर बाजत है ।
मन मंदिर मांह विराजत है, हरिमंदिर जाना छोड़ दिया ॥१॥
सब ओर उसी की हस्ती है, हरि प्रेम की दारू सस्ती है ।
अब दृष्टी में निज मस्ती है, दृष्टी का जमाना छोड़ दिय ॥२॥
आनन्द सरोवर बहता है लहरों से बुल बुला कहता है ।
हम तुम में भेद नहीं रहता है, लो सारा बहाना छोड़ दिया ॥३॥

ये हिन्दू यवण अरु ईसाई, अरु बुद्ध यहूद कलीसाई ।
इक मालिक के हैं शरणाई, जब जीका दुखाना छोड़ दिया ॥४॥
बाजों पे स्वर से गाते हैं, कोई गाकर शब्द सुनाते हैं ।
उसे अपने से आप वो पते हैं, जब शब्द सुनाना छोड़ दिया ॥५॥
जहां देखता हूं चिन्मात्र वही, सब ओर प्रकाशक मात्र वही।
बस एकहि पात्र अपात्र वही, धुन नाद बजाना छोड़ दिया ॥६॥
वह अन्तर ज्ञाता ज्ञापक है, सब रूप से आप वो व्यापक है।
सब रचनाका वह थापक हैं, जग जाल बिछाना छोड़ दिया ॥७॥
नहीं कोई सन्यासी वेष लिया, नहीं किसी पंथका लेख लिया ।
गुरुज्ञान से सोचके देखलिया. मन को भटकाना छोड़ दिया ॥८॥
ज्ञानकी अग्नि सिलगती है, सब ओर से ज्योती झलकती है।
रस प्रेम की बूंद छलकती है, कोई लक्ष्य बनांना छोड़ दिया ॥९॥
हुवा रामके साथ बिलास सखी, हुए रामजी आप निहाल सखी
गई अपनी सुरतकी संभाल सखी, कहीं आना जाना छोड़ दिया

अथानन्य भक्तिः ।

श्री रामचन्द्र मुकंद माधव गोपी श्याम तुही तो है ।
वह गणेश विष्णु, महेश ईश्वर सर्व काम तुही तो है ॥१॥
जिसे लोग कहते हैं जगपिता, उसे आप जानिये सर्व को।
वही आत्म है परमात्मा अरु सर्वनाम तुही तो है ॥२॥
बहु काल ढून्ढते हो गया, न मिला कहीं भी तेरा पता।
पर भेद अन्तको खुला गया कि वह सर्वधाम तुही तो है ॥३॥
तुही सच्चिदानन्द रूप है, तुही आप सर्व स्वरूप है ।
तुही जैसे शूरज धूप है, रहा सर्व ठाम तुही तो है ॥४॥
जहां कहना सुनना नहीं रहा, अरु सोचना न कहीं रहा।
जहां नाम रूप नहीं रहा, वही ब्रह्मधाम तुही तौ है ॥५॥
कोई कह पुकारो कि हे हरिः व रहीम नाम से भी सही।
सोई बुद्ध नाम से बुद्ध भी अरु राम राम तुही तो है ॥६॥

हुई जैसे पानी से भाप थी, इक आदि सत्ता हि आप थी।
कहिं ईश सृष्टि की छाप थी, सब सीता राम तुही तो हैं ॥७॥

अथ श्री बाँसुरी लीला

रूपक इसका इस प्रकार है:—

श्रीकृष्ण आत्मा है, राधा माया कृष्ण की श्री है, मुरली बजाना ब्रह्माकार वृत्ति रूप ज्ञान है।

गोप तथा गोपियां, नाना इच्छा वासना से रहित, केवल प्रेम रस युक्त भक्त हैं।

गाय चराना क्रम रचना इत्यादि नाना व्यवहार विलास है, रूठना मनाना मिथ्या अहङ्कार का विलास है माया का ज्ञान से विरोध है, इस लिये राधा बांसुरी छिपा देती है, माया से कोमल ज्ञान तिरोहित होजाता है।

श्री कृष्ण समता सान्तवन से माया के अनुकूल वर्तते हुए पुनः ब्रह्माकार रूप ज्ञान सम्पादन करते हैं माया रूप राधा, कृष्ण को उपालंभ देती है कि तेरे शरणागतों को तेरे लिए लोक लज्जा त्यागादि कठोर दुःख सहने पड़ते हैं। सब ज्ञाततः वा अज्ञाततः आत्म सन्मुख हैं यानी ब्रह्म-आकार वृत्ति को धारण किये हैं, क्योंकि कृष्ण से उतर कुछ है ही नहीं। 'सदसच्चाहमर्जुन' यह गीता में भगवान् ने स्वयं कहा है। बिना बंसी के स्वर सुने यानी आत्म ज्ञान बिना, समाधी नहीं होती, सुन कर कृष्ण आत्म साक्षात्कार होता है माया बिध्न नहीं करती किन्तु सब कृष्ण से एकीभूत होकर उन्मत्त रहते हैं। अज्ञान पट दूर हुए पीछे झांकी ही है।

श्रीकृष्ण उवाचः—

वह बांसुरी हमारी राधा कहां छिपाई।
जब से उसे गुमाई पल भर न नींद आई॥
बिन उसके गाय सारी फिरती हैं मारी मारी।
रहती सदा दुखारी यह जी में क्या समाई॥

छोटा सा नंद लाला मैया ने दुख से पाला।
गैया कहा चरा ला मुरली मुझे सिखाई॥
तब से फिरूं मैं बन में चा खेलूं गोपियन में।
अथवा फिरूं गलिन में यह बांसुरी सहाई॥
जब बालकन में जाऊं खेलूं कि लड़के आऊं।
छिन मन का दुख मिटाऊं तब बांसुरी बजाई॥
बाबा ने दीन्ही गारी मां ने लकुटिया मारी।
भागूं बजा के तारी स्वर से उसी पे गाई॥
यह बन्सिया दुलारी मैं उसपे जान वारी।
जा करके लादो प्यारी बस इसमें है भलाई॥
दो बांस की हैं पोरी मांगूं हुं हाथ जोरी।
विनती करूं चिरोरी लादो जहां छिपाई॥
जो बांसुरी नदोगी दुख भी बड़े सहोगी।
श्रीकृष्ण हम हैं योगी तुम से सहा न जाई॥
तुमने कहा न माना सब गोपियों ने जाना।
मुरली का मैं दिवाना हो जायगी लड़ाई॥
हमको ये दान दोजे ऐसा न आप कीजे।
तुम्हरा न मान छीजे हम से न हो बुराई॥
सीता का जो सहारा श्री कृष्ण ही है प्यारा।
राधा से कर किनारा कान्हा ने भौं चढ़ाई॥

श्री राधिका उवाच:-

मुरली अधर पे रखके क्यों जी जलाया तू ने।
मेरी जगह पे उसको राधा बनाया तू ने॥
जादू से कोई नारी मुरली बनाके धारी।
कैसा जती मुरारी बाना बनाया तू ने॥
मुरली जो धुन सुनाती दिलको मेरे न भाती।
मैं उसको क्यों छिपाती मुझसे छिपाया तू ने॥
कर करके जोरा जोरी बैयां कभी मरोरी।

योंही सदा मुरारी हमको सताया तूने ॥
बस्ती में और वन में मंदिर गली में जन में ।
मेलों में अरु चमन में, घर घर फिराया तूने ॥
नहीं भंग नहीं सुरा है कैसा चढ़ा नशा है ।
नस नस में जा बसा है बेसुध बनाया तूने ॥
अपने सखा बुलाये हमको उन्हें दिखाये ।
उनसे हंसे हंसाए वेश्या बनाया तूने ॥
माखन चुरा चुरा कर बछड़ों के मुंह लगा कर।
उनको पिटा पिटा कर दिलको चुराया तू ने ॥
चूल्हे जलाऊं बन्सी तुझको दिखाऊं बन्सी ।
आजा बताऊं बन्सी हमको जलाया तू ने ॥
यह राम जोगमाया श्री कृष्ण जी की छाया ।
मोहन को भय दिखाया अच्छा दिखाया तूने ॥
माया की प्रभुताई देखी तो हंसी आई ।
नैनों से यह लखाई हमको भुलाया तूने ॥

श्री कृष्ण उवाचः-

थी बुद्धिमान ज्ञानी तुमतो बड़ी सयानी ।
क्या होगई दिवानी ओ मेरी राधा रानी ॥
यह मुरलिया जलादो तुम भस्म ही बना दो ।
वायू में फिर उड़ादो पहुंचेगी कुछ न हानी ॥
बांसों में हम रमेंगे मुरली की धुन बनेंगे ।
स्वर आप हो बजेंगे तुम घर भरोगी पानी ॥
इतना सिखाया हमने इतना सुनाया हमने ।
इतना मनाया हमने पर एक भी न मानी ॥
मुरली हमारी लादो हमसे कहो सुनादो ।
श्री राम कृष्ण गा दो मोहन रसी बानी ॥

॥ ॐ ॥

मोहन ने जो सुनाई राधा के मन को भाई ।

दौड़ी कहीं पे जाई झट बांसुरी वो लाई ॥
गल बांह डालकर फिर देखा उन्हें नजर भर ।
हाथों में बांसुरी धर बोली कि लो कन्हाई ॥
मैं तुझ कने रहूंगी जोगन तेरी बनूंगी ।
भव दुःख भी सहूंगी लज्जा सकल गवांई ॥
गाती फिरूंगी वन में सखियों में साधु जन में ।
वैराग होगा मन में तुझ कृष्ण की दुहाई ॥
दृष्टी जहां पड़ेगी तुझसे नजर लड़ेगी ।
राधा न वां अड़ेगी तुझ में रहे समाई ॥
लो मुरलिया बजादो कुछ दर्द भर के गादो ।
कुछ प्रेम से सुनादो मत भेद सब भुलाई ॥
स्वर वह सुनादो भरके घर के रहें न दर के ।
हों आपके न परके मस्ती रहे वो छाई ॥
सखी वो धुन सुनानी सुन मन रहे न बानी
मैं ज्ञान की दिवानी तेरी शरण में आई
मैं राधिका रहूं ना बन्सी की धुन सुनूं ना ।
मोहन अलग लखूं ना निज रूप में समाई ॥
जो तेरी ये अदा है वोही तो राधिका है ।
छब तेरी बन्सिया है लीला तेरी कन्हाई ॥
मोहन ने दिल लगा के मुरली अधर पे लाके ।
राधा से मन मिला के यह रागनी बनाई ॥
भारत का युद्ध रचेंगे अर्जुन से जो कहेंगे ।
सब शोक मन रहेंगे वह ज्ञान धुन सुनाई ॥

पहिली तानः-

सतचित अरु सुख रूप सनातन विश्व रचैया मैं ही तो हूं
मायापति जगदीश पुरातन राम रमैया मैं ही तो हूं ॥ टेक ॥
पुरुषोत्तम हूं नित्य निरंजन, पुरुष कहैया मैं ही तो हूं ।
निर्विकार निर्गुण परमात्मन् वेद कथैया मैं ही तो हूं ॥

निज माया कर विविध रूप से विश्व भरैया मैं ही तो हूं।
बावन रूप धार पृथ्वी पे बलि राजा छलैया मैं ही तो हूं॥
सत चित अरु सुख रूप सनातन॥ १॥

परशुराम हो क्षत्री विनाशे नाश करैया मैं ही तो हूं।
श्रीराम चन्द्र ह्वै रावण मारयो दुष्ट दलैया मैं ही तो हूं॥
श्री कृष्ण चन्द्र आनन्द कंद बन्सी को बजैया मैं ही तो हूं
धर्म कर्म वेदन संतन मर्जाद रखैया मैं ही तो हूं॥
सत चित अरु सुख रूप सनातन॥ २॥

रावण के घर जनक सुता की पीर हरैया मैं ही तो हूं
भरी सभा में द्रुपद सुता की लाज रखैया मैं ही तो हूं
गौतम नार पगन से छू कर मुक्त करैया मैं ही तो हूं
लोक लाज से गोप सुतन की लाज हरैया मैं ही तो हूं॥
सत चित अरु सुख रूप सनातन॥ ३॥

विप्र सुदामा अरु उद्धव की साख दिवैया मैं ही तो हूं
खंभ भार प्रह्लाद भक्त के, प्राण बचैया मैं ही तो हूं
ध्रुव बालक की सीस जटा पे, हाथ धरैया मैं ही तो हूं
पकर बांह वीर अर्जुन. उद्धार करैया मैं ही तो हूं
बासुदेव मनमोहन हरि, चित चोर कन्हैया मैं ही तो हूं
जुग जुग में अवतार धार, भव भार हरैया मैं ही तो हूं
सत चित अरु सुख रूप सनातन॥ ४॥

पीताम्बर शिर मोर मुकुठ धर, रास रचैया मैं ही तो हूं
भद्रा मुद्रा धार ज्ञान, उपदेश करैया मैं ही तो हूं
काशायांबर हस्त कमण्डल, अलख जगैया मैं ही तो हूं
बुद्धदेव शंकर दत्तात्रय; नग्न रहैया मैं ही तो हूं
सन्त रूप नारायण रामा, भक्त तरैया मैं ही तो हूं
सतचित अरु सुख रूप सनातन, बिश्व रचैया मैं ही तो हूं
माया पति...॥ ५॥

भारत नैया वही जात है, पार करैया मैं ही तो हूं

भव सागर मंजधार है बेड़ा, नाव खिवैया मैं ही तो हूं
पृथ्वी पर जब दुष्ट बढ़े, परिहार करैया मैं ही तो हूं
दुःखारत की सुनी टेर, उद्धार करैया मैं ही तो हूं
जग उत्पत्ती पालन और संहार करैया मैं ही तो हूं
सतचित अरु सुख रूप सनातन, विश्व रचैया मैं ही तो हूं
माया पति जगदीश पुरातन, राम रमैया मैं ही तो हू. ॥ ६ ॥

दूसरी तान

ज्ञान तुम्हें विज्ञान सहित अब, अशेष कृष्ण यह कहता है।
जिसे जान कर यहां अन्य, ज्ञातव्य शेष नहीं रहता है ॥ १ ॥
सहस्रों में कोइ एक मनुष्य, सिद्धि अर्थ करता है यत्न।
यत्न शील चित शुद्धों में, काई मुझको जाने क्या मैं कृष्ण ॥ २ ॥
भूमि जल अग्नि अरु वायू, नभ मन बुद्धि अरु अहंकार।
आठों जड़ अपरा प्रकृति. कारण शक्ति मेरी विचार ॥ ३ ॥
इन आठों से न्यारी परा, प्रकृति लो तुम मेरी जान।
जीव रूप चैतन्य शक्ति यह, जिसने धारा विश्व महान ॥ ४ ॥
जड़ चेतन सब भूतों की ही कारण यह दो हैं जानो।
मैं सब जग की उत्पत्ति अरु, प्रलय हूं यह पहिचानो ॥ ५ ॥
मुझ से अलग श्रेष्ठ अरु सूक्ष्म, रहा नहीं स्थित कोई।
मुझ में सब यह यूं पोया, ज्यूं सूत में सूत मणी पोई ॥ ६ ॥
जलों में रस हूं सूर्य्य चन्द्र में, तेज, प्रणव हूं वेदों में।
नभ में शब्द अरु नरों में पौरुष, व्यापक यों सब भेदों में ॥ ७ ॥
शुद्ध गंध पृथ्वी में मैं हूं, और अग्नि में तेज स्वरूप।
सब जीवों में जीवन हूं मैं, तापस जन में हूं तप रूप ॥ ८
सब भूतों का बीज सनातन, कारण रूप तुम लखो हमें।
बुद्धि मान जनता में बुद्धि हूं तेजवान में तेज हूं मैं ॥ ९ ॥
बलवानों में बल भी मैं हूं, काम राग से रहित जोही।
जीवों में वह काम भी मैं हूं, धर्म विरुद्ध होवे ना जो ॥ १० ॥
जो कुछ भाव सात्विक राजस तामस, उनको मुझसे जान।

वे मुझ में कल्पित हैं सारे, मैं तो उनमें नहीं सुजान ॥ ११ ॥
तीनों गुण वाले भावों से, इन से मोहित सब जग यें।
इन से परे श्रेष्ठ सूक्ष्म औ, अविनाशी नहीं लखे मुझे ॥ १२ ॥
मुझ ईश्वर की है दुस्तर, यह माया तीन गुणों वाली।
मुझको ही तज अन्य लखें जो, माया तरें भाग्य शाली ॥ १३ ॥
मैं हूं होम अरु यज्ञ सुधा में औषधि भी मैं ही तो हूं।
मन्त्र हूं मैं अरु हविश अग्नि हूं, घृत स्वरूप मैं ही तो हूं ॥ १४ ॥
पिता हूं मैं जग की माता हूं, धाता और हूं पिता महान।
ज्ञेय रूप हूं पवित्र ओम्, ऋकसामयजू तू मुझसे जान ॥ १५ ॥
सब को गति साक्षि भरता हूं, निवास शरण पर उपकारी।
उत्पत्ति प्रलय स्थान खानी हूं, बीज अनासी हूं प्यारी ॥ १६ ॥
मैं तपता हूं वर्षा निग्रह, करता रूप भी मैं ही हूं।
अमृत हूं अरु मृत्यू भी हूं, सत् औ असत् सब मैं ही हूं ॥ १७ ॥
सत्ता मेरी भान है मेरा नाम, रूप सब मेरा है।
मैं हूं तू अरु तू भी मैं हूं, सब में हूं सब तेरा है ॥ १८ ॥
तू मैं यह सब छोड़ भेद, क्या तेरा है क्या मेरा है।
तू ही तू सब मैं ही म, कुछ नहीं तेरा, नहीं मेरा है ॥ १९ ॥
मैं हूं ब्रह्म मैं ही माया हूं, मैं ही जीव कल्पित अज्ञान।
सूक्ष्म से सूक्ष्म अतिशय हूं मैं, अरु महान से अधिक महान ॥ २० ॥

ओ३म्

मोहन ने मुरली में भर कर, मधुर मधुर गाई यह तान।
नर नारी शांत होगये, उनका मिटा मूल अज्ञान ॥ २१ ॥
किसी गाय के मुख में त्रण था, तृण दबाय वह खड़ी रही।
दूध दही मटकी शिर धर के, नारी तकती अड़ी रही ॥ २२ ॥
मोर पंखी पर फैलाये, जैसे थे वैसे ही रहे।
गोप सखा दृष्टि ठहराए जैसे थे वैसे ही रहे ॥ २३ ॥
गुरुकुल को जाते बालक सब, जाना गए वहां का भूल।
प्यारी राधिका भूल आपको, कृष्ण रूप हो गइ समूल ॥ २४ ॥

कृष्ण आप बंशीधर चुप हो, बेसुध मग्न विज्ञान।
निर्विकल्प ब्रह्म भाव में, उनका लगा समाधी ध्यान ॥ २५ ॥
देखा राधा को मोहन ने, पूर्ण हुई कल्पना शान्त।
राधा लीन भई मोहन में, चित्त हुवा केवल निर्भ्रान्त ॥ २६ ॥
उसको हंस कर वंशी धर ने, निज स्थान से दिया जगा।
आंख खोल कर उसने देखा, मोहन बोले हे राधा ॥ २७ ॥
सुन मेरा उपदेश प्रसन्न हो, पाया उसमें जो कुछ स्वाद।
जो समझा सो हमें सुनादो, कहदो सर्व सार सम्वाद ॥ २८ ॥
हाथ जोड़ सविनय मोहन को, पहले उसने किया नमाम।
बोली गद्गद् हो कहती हूं, यथा बुद्धि मैं हे घनश्याम ॥ २९ ॥
कृष्ण आत्मा तुम हो मैं हूं, दुस्तर माया शक्ति सुजान।
मैं हूं संग तुम्हारे वृत्ति, ब्रह्मा कार मुरलिया जान ॥ ३० ॥
गोप गोपियां सकल बासना, और रूठना हैऽहंकार।
पट अज्ञान दूर जब होवै, पावे झांकी जय जय कार ॥ ३१ ॥
गाय चराना खेल रचाना, खाना पीना अरु गाना।
लीला है व्यवहार जगत का, हांसी बोली अरु ताना ॥ ३२ ॥
अयं आतमा ब्रह्म, तत्वमसिऽहं, ब्रह्मास्मि, ब्रह्म प्रज्ञान।
सर्वं खल्विदं ब्रह्म, कहा यह, मुरली बजा वेद का ज्ञान ॥ ३३ ॥
वासु देव है सर्व जगत यह जीवनन्मुक्त समझते हैं।
भेद लखें सो राग द्वेष युत, मोह जाल में फंसते हैं ॥ ३४ ॥
वासुदेव से भिन्न नहीं जो, वासुदेव की लीला है।
लीला है सो वासुदेव है, वासुदेव सो लीला है ॥ ३५ ॥
बर्षा पुष्पों की हुई नभ से अखण्ड ब्रह्म का हुआ प्रकाश।
धन्य धन्य जय जय शब्दों से, गूंज उठा सारा आकाश॥ ३६ ॥
सीताराम जो लखे निरंतर, राधे श्याम अथवा ध्यावे।
उभय एक है जो समझे सो, तज अज्ञान मोक्ष पावे ॥ ३७ ॥

इति श्री बांसुरी लीला संपूर्ण।

भजन ।

जीता रहूं सदा मैं मत प्राण तन से निकले।
या आज ही मरूं मैं यह प्राण तन से निकले॥ १
कुछ भी नहीं है परवाह पर नाथ ये दया हो।
यह दंभ दर्प लालच अज्ञान मनसे निकले॥ २॥
मल पित्त बात कफ से यह देह भर रहा है।
कुल जाति और धन का अभिमान तन से निकले॥३॥
हम हाथ से जब अपने प्यारे जला चुके हैं।
फिर हाय बिष भरी क्यों यह आन तनसे निकले॥४॥
मैं सब का आत्मा हूं सब आत्मा है मेरा।
ये भावना अटल हो फिर प्राण तन से निकले॥ ५॥
मत वासना कोई भी मन में कभी उदय हो।
सब वासुदेव सीता सब राम मन से निकले॥ ६॥

भजन

जगत में जीवन के दिन चार जगत में जीवन के दिन चार ॥ टेक॥
हितकर केवल है वैराग युत, सत्यासत्य विचार।
ब्रह्म निष्ठ विद्वान जगत में, रखत शुभ व्यवहार॥ १॥
दंभ दर्प अभिमान क्रोध, पारुष्य कपट आचार।
यह असुरन की सम्पति भाषत, मोहन कृष्ण मुरार॥ २॥
सत्य सत्य है भाषो कोई, अन्तज नर अरु नार।
योग ज्ञान लागत सब फीके, बिन समता सुख सार॥ ३॥
लोक रिझावन शोक बढ़ावन खान पान भण्डार।
मोक्ष धर्म तज चूल्हे प्रीती भाड़ पड़ो आचार॥ ४॥
विन निष्ठा के ज्ञान ऐसा है ज्यूं विधवा शृंगार।
वैतृष्णा हीन योग ठग विद्या वेश्या को व्यवहार॥ ५॥
अन्तर ताप छूटे विन सब ही झूठी ब्रह्म पुकार।
अशरण शरण एक तू ही है सीताराम भरतार॥ ६॥

वैखासिक मति अन्य नहीं है सब हिंसा विस्तार।
अन्तर ताप छूटे बिन सब ही झूठी ब्रह्म पुकार॥ ७॥

श्री हरिशरण स्तोत्रं॥

विधाता सर्व जग का तू हरिः है, नियम संहार करता भी सही है,
जहां ढूंढ़ा वहां पाया तुही है, जिधर देखा तो तेरा रूप ही है।
इसी से मैं शरण आया तुम्हारी, दया मुझपर करो हे विश्वधारी॥१॥
कोई मेरे पिता है और न माई, न मेरा कोई बन्धू और न भाई,
न कोई पुत्र पुत्री और लुगाई, तुम्ही बस मेरे इक ही हो सहाई।
तुम्हारेही मैं दरका हूं भिखारी, दया मुझपर करो हे विश्व धारी॥२॥
किया पल भर न मैं चिन्तन हरीका, किया सेवन न तीरथ भी कोई सा
न श्रद्धा से कभी की देवपूजा, विधी से की बड़ों की भी न सेवा।
तुम्हीं ने सबकी बिगड़ी को संवारी,दया मुझपर करो हे विश्वधारी॥३॥
किए पहिले से मैंने दुष्ट जो काम, उन्हें जब याद करता हूं मैं जिसठाम,
तो दिल है कांपता होकर बे आराम, पतित पावन भी तो है आपका नाम
रटन है नाम की तेरी मुरारी, हूं शरणागत तेरी हे विश्व धारी॥ ४॥
सदा दुर्वासना ने मुझको फेरा, मेरे चित्त को नहीं देती बसेरा,
मेरे तन को तो रोगों ने भी घेरा, मेरा जीवन भी पर के हाथ गेरा।
मेरी सारी समझ रस्ते सिधारी, दया मुझपर करो हे विश्व धारी॥५॥
बुढ़ापे जन्म के दुःख रोख भारी, सुअर कुत्तों की योनी बहुत सारी,
ये सब फल भोगती ईश्वर बिसारी, भटकती फिरती है दुनिया बिचारी।
तुम्हीं को जग में देखा पाप हारी, हूं शरणागत तेरी हे विश्व धारी॥६॥
भला जो नीच हो पापों से भरपूर,बड़ा निन्दित भी हो और बहुत ही क्रूर,
तेरा ले नाम हो इक बेरि भ्रम दूर, तो दो निज लोक उसको प्रेम रस पूर
इसी से नाथ है बिनती हमारी, हूं शरणागत तेरी हे विश्वधारी॥७॥
जो बचपन था वो खेलों में गंवाया, बुरे संकल्प ने मुझको सताया,
नहीं रस्ता कोई तरणे का पाया, इसीसे मैं तेरे चरणों में आया।
कहो क्यों नाथ मेरी सुध बिसारी, हूं शरणागत तेरी हे विश्वधारी॥८॥

तुम्हीं रखते हो ईश्वर जगत की लाज, सभी दीनों के रखवारे महाराज,
तुम्हीं ने द्रौपदी के करदिए काज, कथा विख्यात है भारत में यहआज।
सभा में जब वो अबला रोपुकारी, हूं शरणागत तेरी हे विश्वधारी॥९॥
मुझे हे नाथ पापों से बचाओ, मेरे दिल के बुरे चिंतन हटाओ,
मेरा दिल अपनी भक्ती में लगाओ, मुझे अपनी ही गोदी में बिठाओ।
सही जाती नहीं अब देर भारी. हुं शरणागत तेरी हे विश्व धारी॥१०॥
किसी की ईर्षा दिलमें न आवे, किसीको मत मेरी बाणी सतावे,
किसीका जी न मेरा तन दुखावे, मेरा तन मन सभी के काम आवे।
करु मैं सबकी ही सेवा गुजारी, हूं शरणागत तेरी हे विश्व धारी॥११॥
मेरे दिलसे भरम का जल्द हो नाश, जहां देखूं वहांपर तेरा प्रकाश
मेरे मन से मिटे स्वारथ की सब आस, सभीके दिलों मेंभी हो मेरा विश्वास
सभीके घरकी भी मैं हूं बुहारी, हुं शरणागत तेरी हे विश्वधारी॥१२॥
सभों की आंख मेरी आंख बनजाए, सभोंके दिलमें मेरा दिल समाजाए
सभोंके दुखमें मेरा दुख नजर आए, मेरे आनन्द से संसार लहराये।
तेरी हस्ती में हो हस्ती हमारी, हुं शरणागत तेरी हे विश्वधारी॥१३
भला किस जोंन पै होवे उभरना. सभी तनका जो इक दिन हो गुजरना।
हो मरने से अगर पहिले हि मरना. तो फिर क्या मृत्यु से है राम डरना।
नहीं परवाह कुछ मुझको मुरारी, हुंशरणागत तेरी हे विश्वधारी॥१४॥
तुम्ही निगुर्ण भी होऔर तुम निराकर, तुम्हीं सब रूप से हेनाथ साकार
मेरी अर्जी है मर्जी है तुम्हारी, हुं शरणागत तेरी हे विश्वधारी॥१५॥
बचन सब धर्म के अरु वेदचारी, पढ़े बहुग्रन्थ रामायण विचारी,
तो सबमें सबने तेरी जय पुकारी. तुम्हीं हो पूज्य अरु तुमही पुजारी।
निरंजन देवगुरु ईश्वर आचारी, हुंशरणागत तेरी हे विश्वधारी॥ १६॥
न सीताही रही अरु नहीं रहे राम, न मथुरा में रहे राधा व घनश्याम
न कोई दीन दुनिया बस वो निष्काम, सदा अपनी ही महिमा मे सियाराम
किया करता हैहांसी अरु खिलारी, हुं शरणागत तेरी हे विश्वधारी॥१७॥

भजन

स्वांस २ पर ॐ ॐ कह बड़ा अमोलक स्वांसा है॥ टेक॥

स्वांस गया मंदिर से बाहर नहीं आवन की आशा है।
देह भवन में प्राण गमन का अद्भुत बना तमाशा है ॥१॥
साबुन मल मल काया धोई पहरा मलमल खासा है।
अन्त समय जब प्राण गए तब मरघट सबका बासा है॥२॥
समय पड़े पर चलना होगा भेद न रत्ती मासा है।
बने तो कुछ तैयारी करले चलना सफर कड़ा सा है ॥३॥
पंच कोश से न्यारा तू ज्यूं मुंजी मांह कपासा है।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म जगत ज्यूं मिश्री माह बतासा है ॥४॥
बिन विचार परमात्म लखे तो, जीवन भर दुख रासा है।
काल चक्र नित् चले निरन्तर अवके तेरा फांसा है ॥ ५ ॥
सुत नारी गृह धन सम्पति सब केवल शब्द बिलासा है।
कहत रामजी देखत देखत योंही जगत बिनासा है॥ ६ ॥
स्वांस स्वांस पर ॐ ॐ कह बड़ा अमोलक स्वांसा है।

प्रार्थना

आनन्द रूप प्यारे सूरत जरा दिखाजा।
छिप छिप के मत दुखा जी नजरों में जल्द आजा ॥टेक॥
तन मन बचन हमारा अरु प्राण तक भी सारे।
सब तुझ पे हमने वारे अब सामने तो आजा ॥
धन माल और नारी लगती नहीं हैं प्यारी।
तेरा ही हूं भिखारी मेरे समीप आजा ॥
वैराग और शमदम हों कुछ जो हम में साधन।
महा वाक्य भर के मोहन बंसी हमें सुनाजा ॥
चिन्मात्र एक सत्ता व्यापक अखण्ड देखूं।
मन में न और आवे युक्ती हमें बताजा ॥
यह देह प्राण अरु मन बुद्धि भी अरु तमो गुण।
इन से परे जो तू है न्यारा मुझे लखा जा ॥
यह नाम रूप परदा दिल से मेरे हटा दे।

अद्वैत ब्रह्म पूरण अपना दरस दिखाजा ॥
यह देह जग है मिथ्या सत् आत्मा में कल्पित ।
निज ज्ञान रूप मेरे मन में मेरे समाजा ॥
अति प्रेम का विषय है सत्ता स्वरूप तेरा ।
गोदी में अपनी थपकी देकर मुझे सुलाजा ॥
आनन्द सिंधु में नित आनन्द की तरंगें ।
हरदम उछल रही हैं निज प्रेम रस पिला जा ॥
संकल्प की यह रचना जग रूप भान मत हो ।
तू ही तु आप भासे, यह स्वप्न भ्रम मिटा जा ॥
जुग जुग तेरे लिए मैं जोगी बना फिरा हूं ।
अब आप में मिला के बिगड़ी हुई बना जा ॥
सर्वात्मा निरंजन जो आप हूं मैं चिद्घन ।
यह राम रूप दर्शन तेरा तुझी को साजा ॥
तू राम तू हरिः है सब लोक भी तुही है ।
जग जीव आप ही है डंका यही बजा जा ॥

प्रार्थना

इस दर्द दिल की मोहन कोई दवा बतादो ।
मुरली अधर पे धरके इक तान तो सुनादो ॥
इकली हूं माधोबन में साथी न कोई जनमें ।
वैराग भी है मन में मुझको जरा रुलादो ॥
मन में व्यथा बहुत सी क्या २ सुनाऊं दिलकी
इक हाथ अपना रखके मेरी जलन बुझादो ॥
मैं हूं विरह की रोगी अरु आप कृष्ण योगी ।
अभिमान का जो पट है मुझसे परे हटादो ॥
हे कृष्ण तुमहो ज्ञानी मैं आपकी दिवानी ।
तुमसा है कौन दानी गीता हमें पढ़ा दो ॥
भर भर के दिल जो आवे गीता पढ़ी न जावे ।
दो ज्ञान के वचन से धीरज मेरी बंधा दो ॥

ज्ञानाग्नि से जलाके अज्ञान सब मिटा के ।
भस्मी मेरे लगाके जोगन मुझे बनादो ॥
हो दूर भेद दर्शन सब रूप तेरे मोहन ।
सब बासुदेव पूरण मेरे हिये बसादो ॥
अच्छा ये हम ने माना सब तू ही है समाना ।
माया का क्या बहाना ये भेद तो हटादो ॥
मुझको ही जो समझते अरु प्रेम से हैं भजते ।
माया में नहीं उलझते यह सांच कर दिखादो ॥
दुःखों में जा उलझना दीपक विवेक बुझना ।
कठिनाइ से सुलझना यह दुःख है मिटादो ॥
तुझको मेरी शपथ है भ्रम दूर कर कुपथ है ।
या देखना हटादो या फिर नजर मिलादो ॥
तुझ बिन कहां सहाग क्यों कृष्ण नाम धारा ।
या अपना प्रण निभादो या नाम को मिटा दो ॥
जो पाप या धरम है सब ब्रह्म या भरम है ।
क्या वेद का मरम है दिल में मेरे समा दो ॥
सब भ्रम है कहां है, यह कृष्ण को अदा है ।
मोहन से नहीं जुदा है. बन्सी में भरके गादो ॥
श्री राम कृष्ण सीता इस प्रेम रस को पीता ।
गाता रहे तू गीता आशीष यह सदा दो ॥

प्रार्थना ।

हमको बतादो प्यारे जाकर कहां छिपोगे ।
घर भी तो हो तुम्हारे जाकर कहां छिपोगे ॥
तन में रहो लुकाई देखे न कोई जाई ।
वां देंगे हम गवाही जाकर कहां छिपोगे ॥
करणों के गोलकों में प्राणों में बुद्धि मन में ।
वां भी हैं ज्ञान घन हम, जाकर कहां छिपोगे॥
विषयों में जो रमोगे वां भी बुरे फंसोगे ।

ज्ञाता बने हंसोगे जाकर कहां छिपोगे ॥
दुःखों में जाके रहना रुवांसों के बाण सहना।
हम देंगे वां उलहना जाकर कहां छिपोगे ॥
जाकर लड़ोगे रण में अथवा हो घरमें बनमें।
हम होंगे वांही मन में जाकर कहां छिपोगे ॥
वेदों में जो रहोगे महावाक्य में रमोगे।
सोहं हमें रटोगे जाकर कहां छिपोगे ॥
जो जो जगह तुम्हारी सत्ता है सब हमारी।
दृष्टि तेरी हमारी जाकर कहां छिपोगे ॥
श्री कृष्ण २ गाना मुरली की धुन सुनाना।
वां भी हमें हीं पाना जाकर कहां छिपोगे ॥
श्री राम राम सीना यूं राम रम को पीत।
गाता हुं राम गीता जाकर कहां छिपोगे ॥

प्रार्थना।

हमारी आंख से परदा जरा हटा देना।
निगाह हमसे भी मोहन कभीं लड़ा देना ॥
फिरा जो करते हो गलियों में रात दिन प्यारे।
किसी गली में कहीं पांव मत जमा देना ॥
दिलों की बांसुरी में भरके ॐ ॐ का स्वर।
हर एक रोम में इक ओम् ही बसा देना ॥
उठा के पट दिया करते हो झांकी रसिकों की।
वो ही अदा हमें इक बार फिर दिखा देना ॥
तुम्हारा रूप है गोविन्द सत्य चित् आनन्द।
दुई हटा के बस इक आप ही लखा देना ॥
हमें न तुम से जुदा और कुछ कभी भाया।
तुम्हीं गवाह हो मोहन खरी सुना देना ॥
तुम अपने दिल में मेरा चिन्ह भी कहां पाने।
तुम्हें तो इष्ट है छाया तलक मिटा देना ॥

हमें जो देती है दुःख याद तेरी माया की।
सदा निवास से अपने उसे हटा देना॥
तुम अपना देह उठालो चुरा लो मन बुद्धि।
मुझे न चाहिए कुछ मत कहीं फंसा देदा॥
भला कभी तो ये मोहन स्वभाव छोड़ोगे।
इधर की बात को सुनकर उधर लगा देना॥
कभी न बन में फिरें रोते हाय सीता राम।
कोई हमें भी सिया का पता बता देना॥

उपालंभ।

श्री कृष्ण प्यारे मोहन चहे बोलो या न बोलो।
सर्वात्मा निरञ्जन चहे बोलो या न बोलो॥
माया के बन पुजारी देहाभिमान धारी।
रीती सकल बिसारी चहे बोलो या न बोलो॥
बेजान हो चुके हम बलिदान हो चुके हम।
निर्मान हो चुके हम चहे बोलो या न बोलो॥
माया से तेरी यारी लगती नहीं है प्यारी।
जाती नहीं सहारी चहे बोलो या न बोलो॥
मोटर महल अटारी नहीं दासियां सुखारी।
पूजा नहीं पुजारी चहे बोलो या न बोलो॥
जमना चढ़ी मनालो, चलती पे जय बुलालो।
गोविन्द गीत गालो चहे बोलो या न बोलो॥
जोबन के दिन गंवाए अब अन्त के ए आए।
कैसे हो सुध भुलाए चहे बोलो या न बोलो॥
हां नाचले नचाले या के मजे उड़ा ले।
फिर तो लगेंगे ताले चहे बोलो या न बोलो॥
नर नारि हो कि गो खर गृहस्थ या यतीवर।
देह आत्मा बराबर चहे बोलो या न बोलो॥

जोबन के चार दिन हैं जीवन के चार दिन हैं ।
मोहन के चार दिन हैं चहे बोलो या न बोलो ॥
दिल की जलन बुझाओ संताप सब मिटाओ ।
तब कृष्ण तुम कहाओ चहे बोलो या न बोलो ॥
मुरली की धुन सुनाना अरु गोपियों का गाना ।
बीता वो अब जमाना चहे बोलो या न बोलो
माया का सब दिखावा गुरु शिष्य माई बाबा,
फिर तो छूटेगा दावा चहे बोलो या न बोला ॥
मत दिल की अब सताओ मत युक्तियां सुनाओ ।
मत जाल में फंसावो चहे बोलो या न बोलो ॥
मेरी गली में आना बंसी न साथ लाना ।
तब कृष्ण मुंह दिखाना चहे बोलो या न बोलो ॥
श्री कृष्ण छब निराली तिस पर घटाएं काली ।
हो बन के आप माली चहे बोलो या न बोलो ॥
हष्टी में छबि है प्यारी परवाह नहीं तुम्हारी ।
श्री कृष्ण रास धारी चहे बोलो या न बोलो ॥
नहीं ताप जो मिटाया क्यों पीत पट रंगाया ॥
मन की तजी न माया चहे बोलो या न बोलो ॥
जी में है बांध लाऊं और सैकड़ों सुनाऊं ।
तब राम मैं कहाऊं चहे बोलो या न बोलों ॥
मन में मेरे कन्हाई तेरी अदा समाई ।
दे या न दे दिखाई चहे बोलो या न बोलों ॥
जो बांसुरी बजाना सीता रमण सुनाना ।
श्री राम कृष्ण गाना चहे बोलो या न बोलो ॥

अथ श्री चित्त चेतावनी ।

आशा नहीं है इक पल छिन की करले मन सुध मोक्ष जतन की ।टेक॥
बालपने के मित्र सिधारे भाई बन्धु सब चलने हारे ।
तुझको भी है जाना प्यारे, जाग सोच कर बाट चलन की ॥ १ ॥

कर विचार क्या करी कमाई, पाप कियो क्यों करी भलाई।
अबभी हो सचेत रे भाई, कर कुछ पूंजी नेक चलन की ॥ २ ॥
भोगे भोग सभी सुख कारी, तृष्णा रंच घटी न तिहारी।
अबतो राम चलन की वारी, करले संगत साधू जन की ॥ ३ ॥
यह सम्बन्ध भुलाना होगा, प्रीतम के घर जाना होगा।
संग न अपना बिगाना होगा, तोड़ सभों से प्रीति स्वप्न की ॥ ४
मित्र अरु बन्धू प्रीतिहु जोड़ें, अन्त समय सबही मुख मोड़े।
तू नहीं छोड़े यह सब छोड़ें, छोंड़ो मन सब चाह सुखन की ॥५॥
धन दारा सुत मित्र सुखारे, नाशमान इक चमका सारे।
स्वार्थ हेतु सब साथ तुम्हारे, तुझको चिन्ता जन्ममरण की ॥ ६ ॥
जिनके हित तू पाप कमावे, जैसे तैसे कर धन लावे।
संग न आया नहिं कोई जावे, मत शिर गठरी धर पापन की ॥ ७ ॥
मोह अविद्या के बस भूला, क्या फिरता है फूला फूला।
अब भी चेत नहीं कुछ भूला, धार शरण दृढ़ हरि चरनन की ॥ ८ ॥
देह जगत यह जान विनाशी, आत्म ब्रह्म सत्य अविनाशी।
धार विवेक हिये सुखराशी, जाय गहो संगत संतन की ॥ ९ ॥
यह जग स्वर्गलोक लों सारो, मिथ्या स्वप्न समान विचारो।
सदा वमन ज्यूं भोग विसारो निर्भय गति वैरागीजन की ॥ १० ॥
दुख परिणामी भोग हैं सारे, दोष दृष्टि कर मन समझा रे।
बाहर इन्द्रिय दमन कर प्यारे, श्रद्धा कर गुरु वेद वचन की ॥ ११ ॥
जो कुछ शिक्षा गुरु बतलावें, जन्म मरण के चक्र छुड़ावें।
धार हृदय दृढ़ जो मन ध्यावें, छुटे कल्पना आवागमन की ॥ १२ ॥
यह जग बंध महादुख दाता, कब मुझ से छूटे यह नाता।
बिन हरि अन्य नहीं कोई त्राता, मोक्ष हेतु कर यों रति मनकी॥१३॥
सतगुरु खोज चरण चित दीजे, तन मन धन अर्पण सब कीजे।
ब्रह्मज्ञान तिन मुख सुन लीजे धार लक्ष हिय दृढ़ साधन की॥ १४॥
ब्रह्मनिष्ठ वेद को जाने, सो गुरु शिष्य रोग पहिचाने।
पथ्य करे अरु शिक्षा माने होय सकल वृत्ति कंचन की ॥ १५ ॥

चित के दुष्ट स्वभाव निकारो, मन्द भावना मन की जारो।
शान्ति समता हृदय धारो, बोलो बाणी प्रेम वचन की ॥ १६ ॥
मुख से कटू कभी मत बोलो, पहिले सोचो पीछे बोलो।
मत काहू की छाती छेलो, क्या आशा है कुछ जीवन की ॥ १७ ॥
मन के सब सङ्कल्प निवारो, एक आत्म चिन्तन हिय धारो।
मुख ते हरि का नाम उचारो, नाव यही है पार करन की ॥ १८ ॥
देह अध्यास व्यर्थ हङ्कारा, काला नाग हिये फुंकारा।
अज्ञानी को चुन चुन मारा, औषधि एक हरि स्मरण की ॥ १९ ॥
किस आशा के हेतु जलना, किस जीने पर अधिक उछलना।
फिर भी चलना फिर भी चलना, येहि रीति संसार भ्रमण की २०
ज्ञानीजन से मुदिता धारो, जिज्ञासु जन मित्र विचारो।
दीनन पर कर दया अपारो, करो उपेक्षा दुष्ट जनन की ॥ २१ ॥
वैर विरोध करे किसते मन, जहां तहां तेरा प्रीतम दर्शन।
चार दिनों का यह जग जीवन, रहनी सहनी है दो दिन की ॥ २२ ॥
जग से झट पट नाता तोड़ो, सुख भोगन से मुख को मोड़ो।
एक प्रीति आत्महित जोड़ो, श्रवण मन निद्धिध्यासन की ॥ २३ ॥
पंच कोश से तू है न्यारा, चेतन रूप स्वयं उजियारा।
देह जगत है मिथ्या सारा, नाम रूप लीला चेतन की ॥ २४ ॥
सतचित आनंद सागर भारी, जीव जगत हरि लहर सुखारी।
यह तो खेलत खेल खिलारी, हंसरुच देखो गति कर्मन की ॥२५॥
जितना जन प्रपंच कहावे, तू निज शक्ति द्वार उपजावे।
देख स्वप्न तू ही भरमावे, लहो बहार सुख चेतन घन की ॥२६॥
द्वन्द धर्म जितने शीत उष्ण, ये नहीं तुझमें प्यारे दूषण।
शुद्ध आत्मा के हैं भूषण, ज्यूं रंगत नाना पुष्पन की ॥ २७ ॥
पढ़ वेदान्त सतगुरु मुख द्वारा, तत्व शोध चेतन सुख सारा।
जहां तहां चिद आनन्द प्यारा, रीति सीख ब्रह्म दर्शन की ॥ २८ ॥
ज्योति में ज्योति परम मिल जावे, विन्दु सागर मांह समावे।
योग ज्ञान फिरको समझावे, रही न सत्ता किञ्चित मन की ॥२९॥

जीव अरु ब्रह्म जगत मन माना, नहीं कहीं आना नहीं कहीं जाना
आपहि आपन मांहि समाना, नहीं कोई ग्रन्थी जड़ चेतन की॥३०॥
देव निरंजन 'सतगुरु प्यारा, यति स्वरूप से हरि अवतारा।
सीता राम प्राण बलिहारा, शिर पर धारी रज चरनन की ॥३१॥
यह विचार है मन समझावन, जिज्ञासूं हित बोध करावन।
सकल नसावे आवन जावन, छूटे जो चाह भोग सुखन की ।३२॥

प्रेम कुण्डलिका

दिवाला निकला प्रीति का, प्रीतम रहा न कोय।
तीव्र रुतर तम भेद सउ मन से डारे धोय ॥
मन से डारे धोय, लगा गंगा में गोता।
प्रीति फंद के मांह, भला क्यों पड़ कर रोता॥
सविनय भाषत राम, पिया अनुभव रस प्याला।
निकल भर्म युत देह प्रीति का गया दिवाला॥ १ ॥
परम प्रेम का विषय है, केवल चिद सुख सार।
अर्थवाद युत भर्म है, झूठे नाते पियार॥
झूठे नाते पियार, शीश छाती धर रोवे।
धंसे कंटकों मांह, प्रीति के कंटक बोवे॥
सविनय भाषत राम, सुनत ना शास्त्र को मरम।
माया तरत अकाम, कृष्ण एव ध्यावे परम॥ २
गोता गंगा में लगे और शीतल तन नम होय।
राग द्वेष युत हृदय के, कल्मष जावें खोय ॥
कल्मष जावें खोय, सकल दुख होवत भञ्जन।
इधर उधर सब रूप, निश्चय भरपूर निरंजन॥
सविनय भाषत राम, फिरे क्यों निस दिन रोता।
ओं गंगा के मांह, लगेगा जिसका गोता॥ ३ ॥
गंगा है विज्ञान की, दूजी बहती धार।
तरनू तारणी युगल है, जो कोई जाने सार॥
जो कोइ जाने सार, परस्पर हेतु ही माने।

गंगा माहिं समाय, ब्रह्मचिद् एक पिछाने ॥
सविनय भाषत राम, भेद से मन हो चंगा।
जहां कहीं हो बास व्यापिनी निर्मल गंगा ॥ ४ ॥
गोता शुद्ध स्वभाव का, जो कोई चहे लगाव।
अखण्ड ब्रह्म चिद्र एक रस, निर्मल साक्षी भाव ॥
निर्मल साक्षी भाव, साक्ष्य देह जग से न्यारा।
केवल अपना आप, आप में आप पसारा ॥
सविनय भाषत राम, समझ कर रहे न सोता।
मारे चिद् विज्ञान, गंग में वड़ कर गोता ॥ ५ ॥
गोता चिद् विज्ञान में, जिसने दिया लगाय।
ज्ञाता ज्ञान अरु ज्ञेय सब, मिटी कल्पना हाय ॥
मिटी कल्पना हाय, गई सब आधी व्याधी।
रही अखण्डानन्द, ब्रह्म निज रूप समाधी।
भाषत सविनय राम, अविद्या मल को धोता।
ब्रह्मरूप चिद् सार, लगे चिद् घन में गोता ॥ ६ ॥
प्रीति फांस को त्यागिये, प्रीती बुरी बलाय।
जोइ फंसा या जाल में, करत रात दिन हाय ॥
करत रात दिन हाय, मांग पी सकै न पानी।
जला करे दिन रात, तपे काया मन वानी ॥
भाषत सविनय राम, बुद्धिमानों की रीति।
नाशमान संसार, मांह त्यागत है प्रीति ॥ ७ ॥
लिखना पढ़ना बोलना, सकल पत्र व्यवहार।
जब तक यह छूटे नहीं, तब तक दुख संसार ॥
तब तक दुख संसार, स्नेह अभिमान न टूटे।
प्रतीकूल अनुकूल, मांह निज मोह न छूटे ॥
सविनय भाषत राम, होत जैसो घट चिकना।
ऐसो है सुख मिले, छोड़िये पढ़नो लिखना ॥ ८ ॥
कविता प्रेम विलाप की, जो भेजी मैं तात।

मन आई सो लिख मरी, रहीं नहीं कुछ ज्ञात ॥
रहीं नहीं कुछ ज्ञात, वही जो मन की धारा।
छुटी लेखनी हाथ, न जाने क्या लिख डारा ॥
सविनय आपत राम, आप तेजोमय सविता।
स्वयं प्रकाशे निर्लेप, कहां कैसी यह कविता? ॥ ६ ॥

श्रीवृन्दावन धाम के सत्संग में सुने हुये दो पद्य।

॥ ॐ श्री हरिः ॥

॥ विरहनी सखि के रूप में मोहन प्यारे की श्री से प्रार्थना ॥

टेकः—राधे ! श्याम से आज मिलादे मुझे।
सेवा कुञ्ज की राह बतादे मुझे ॥
यही अभिलाष श्यामा ! श्याम के दर्शन करूं।
जाऊं शरण वा रीझवारन, प्रभु चरण रज शिर धरूं ॥
कोई सूधी सी गैल बतादे मुझे—राधे ··
बेल या द्रुम, मूल, मधुकर, फूल-फल डाली बनूँ।
सींचूँ नयन जल से कुसुम कानन विपिन मालीबनूँ
ब्रज, भूमि की रेणु बनादे मुझे राधे···
जमना किनारा पास हो, और शरद रैन अकाश हो
आश पूरण होय जब, वृन्दा-विपिन का वास हो ॥
भानू-तनया का नीर पिलादे मुझे—राधे···
भूमि वृज के रूप रस की, वारुणी पीया करूं।
झांकी जुगल बांकी अदा की, सर्वदा कीया करूं ॥
कहूं सोच समझ के लगादे मुझे—राधे···
या बना मकरन्द मृदु, माया मनोहर कुञ्ज की।
कोई तो वस्तु बनादे, श्री कृष्ण केलि-निकुञ्ज की॥
कृष्ण वन्सी ·· तान सुनादे मुझे—राधे··· ॥इत्योम्॥

॥ ॐ श्री हरिः ॥

श्री जी का सखियों सहित मोहन प्यारे से वंसी के दुःख का कथन ॥

श्री राधा—सुन्दर श्याम सुजान संवरिया, अब न बजाओ बांसुरिया ।
या बंसी सुर नर मुनि मोहे, ब्रह्मादिक सनकादिक ज्ञानी ।
चैन नहीं दिन रैन हां हां, सूझत ना मोहे डागरिया ॥

श्रीकृष्ण— या बँसी मोय लागत प्यारी, यापे तन, मन, धन, बलिहारी।
प्राणन प्यारी बांसुरिया हां, प्राणन प्यारी बांसुरिया ॥

श्रीराधा—सुन्दर श्याम सुजान सँवरिया... ... .
या बँसी के बजत ही छूटत सबके ज्ञान ।
सुध बुध रही न बदन की, बिसर गइ कुलकान ॥
सुध बुध हुई गई बावरिया ॥ सुन्दर श्याम सुजान...

श्रीकृष्ण—या बँसी की फूंक पर गोबरधन लियो धार ।
या बँसी सों बल बढ़्यो, नाम भयो गिरिधार ॥
हां हां प्राणन प्यारी बांसुरिया—सुन्दर श्याम सुजान ..



॥ समाप्त ॥